# स्वामी रामाांद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

**कला संकाय के अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि**

**हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा**

## “हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों का योगदान”

(विशेष संदर्भ 2000 से 2015 तक)

शोधा छात्र


**कारामुंगीकर बालाजी गोविंदराव**

(एम.ए., एम.फिल. हिंदी)


शोध निर्देशिका


**डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर**

सहा. प्राध्यापक तथा शोधनिदेशक,

हिंदी विभाग

महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपूर


**फरवरी 2016**

# "हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों का योगदान"

**(विशेष संदर्भ 2000 से 2015 तक)**

# अनुक्रमणिका


| | पृष्ठ |
|---|---|
| 1.1 भूमिका | 02 |
| 1.2 विषय की प्रेरणा | 03 |
| 1.3 शोधकार्य का महत्त्व | 03 |
| 1.4 शोध की उपयोगिता | 04 |
| 1.5 शोध प्रबंध अध्यायों का विभाजन | 05 |
| संदर्भ ग्रंथ सूची | 11 |

# "हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों का योगदान"

**(विशेष संदर्भ 2000 से 2015 तक)**

## 1.1 भूमिका :

आज वैश्विकरण के दौर में भारत की जनभाषा हिंदी विश्वभाषा बन रही है। वैश्विकरण की संकल्पना मुलतः भारतीय ही है। पुरातन साहित्य में **"वसुदैवकम कुटुंबकम"** की यह संकल्पना स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुई है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों ने भी हिंदी को विश्व स्तर पर एक नई पहचान दी है। आज हिंदी धर्म, साहित्य, अध्यात्म की ही नंही बल्कि शिक्षा, सूचना, प्रौद्योगिकी, मनोरंजन, व्यवसाय की भाषा बन गई है। जिस तरह से जनसंचार के विभिन्न माध्यमों ने हिंदी को विश्व स्तर पर नई पहचान दिलवाई है, उसी तरह हिंदी के विभिन्न कार्यक्रमों ने हिंदी को विश्वव्यापी बनाया है। प्रसार माध्यम, संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी ने समयानुसार अपने रूप को बदल कर जहाँ अपनी जिजिविषी को वाणी दी, वहीं अपने व्यावहारिक रूप से अधिकाधिक लोगों को अपना श्रोता, दर्शक, पाठक बनाकर उन्हें हिंदी भाषी बना दिया है। आज हिंदी का समाज समूचे विश्व में फैला हुआ है। विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में जनसंचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

संचार के सभी माध्यमों पर हिंदी का प्रभाव आज दिखाई दे रहा है। संचार के सभी माध्यमों से हिंदी ने भाव, विचार, अवधारणा, मत और मान्यता को जनसमुदाय तक पहुँचाया है। जनसंचार माध्यम में आज के दौर में हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। विभिन्न संचार माध्यमों में हिंदी के अलग-अलग रूप प्रयुक्त हुए है। जैसे रेडियो श्राव्य माध्यम है। अतः इसकी भाषा केवल सुनी जा सकती है। इसलिए यह माध्यम द्रश्य माध्यम से भिन्न है। विज्ञापन माध्यम लाभ कमाने के लिए भाषा को तरोड़ मरोड़कर आकर्षक बनाते है। समाचार पत्र और पत्रिकाओं की भाषा में हिंदी प्रभावी रूप से परिष्कृत होती है। जनसंचार के प्रमुख माध्यम तथा जनसंचार के मुलाधार कंप्युटर, इंटरनेट, रेडियो,

टेलीविजन, टेलीफोन, मोबाईल आदि प्रमुख भूमिका निभा रहें है। आज हिंदी भाषा का प्रयोग विभिन्न संचार माध्यमों में हो रहा हैं तथा इससे ही हिंदी भाषा विश्व की शीर्ष भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

## 1.2 विषय की प्रेरणा :

हिंदी साहित्य का छात्र होने के कारण हिंदी साहित्य की सभी विधाओं के प्रति मेरी रूचि रही है। किंतु प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रति मेरा लगाव कुछ अधिक मात्रा में होने के कारण मैने प्रयोजनमूलक हिंदी में ही विद्यावाचस्पति की पदवी लेने की ठान ली। प्रयोजनमूलक हिंदी में विषय चयन करना कठिन कार्य था लेकिन 20 फरवरी 2016 को आर.ए.सी. बैठक में शोध निर्देशक के रूप में डॉ. पी.डी. चिलगर का नाम तय हुआ मेरे मार्गदर्शन का अनुसंधान हिंदी भाषा विज्ञान पर ही हुआ है। वे प्रयोजनमूलक हिंदी तथा भाषा विज्ञान के एक मर्मज्ञ के रूप में ख्यात है। तब मैने उनसे प्रयोजनमूलक हिंदी में किस तरह के विषय मे होने चाहिए इसपर विचार विमर्श किया। मैने इसी विश्वविद्यालय से बी.जे ॲण्ड एम.एस. की शिक्षा ली है इसी कारण मेरा जनसंचार माध्यमों के प्रति आकर्षण था यह बात जब मेरे मार्गदर्शक डॉ. पी.डी. चिलगर और महात्मा फुले महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. वसंत बिरादार पाटील को पता चली तब हमने बड़े विचार-विमर्श के बाद यह तय किया कि, **"हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों का योगदान (विशेष संदर्भ २००० से २०१५ तक)"** इस विषय में पीएच.डी. की जाए। इस विषय पर शोधकार्य करने के लिए मार्गदर्शक डॉ. पी.डी. चिलगर जी ने मुझे अनुमति दी।

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड व्दारा मुझे **"हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों का योगदान (विशेष संदर्भ २००० से २०१५ तक)"** इस विषय पर मुझे अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ इसलिए मै अपने आपको सौभाग्यशली समझता हूँ। इस विश्वविद्यालय की आदर्शोन्मुखी परम्परा से प्रभावित होकर एवं स्नातक, स्नातकोत्तर शिक्षा इसी विश्वविद्यालय में होने के कारण यहाँ पर ही विद्यावाचस्पति की पदवी भी इसी विश्वविद्यालय से प्राप्त करने का निर्णय लिया है।

## 1.3 शोधकार्य का महत्त्व :

वर्तमान परिदृश्य में हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों को महत्त्वपूर्ण योगदान मिल रहा है। भारत की भाषायी विविधता के बीच हिंदी की भाषायी पहचान विश्व पटल पर गहरे रूप से स्थापित हो रही है, इस कारण भी मैने हिंदी भाषा की वैश्विकता पर अध्ययन करना तय किया। आज हिंदी भाषा समुचे विश्व में कई देशों में बोली एवं सिखी जाती है उसका यह प्रभाव मेरे मन पर स्थापित हुआ। जैसे मॉरिशस, फिजी, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, बिटिश, गयाना, त्रिनिडाड, सूरीनाम, न्यूजीलैंड, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार, इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी इटली, रूस और यूरोप के अन्य देशों के साथ-साथ एशिया एवं अन्य खंडो में हिंदी भाषा का अध्ययन होता है यह भारतीयों के लिए गर्व की बात है। वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा बोलने वाले की संख्या अब अंग्रेजी की बराबर हुई है। इस लिए हिंदी भाषा की वैश्विकता का अध्ययन कर हिंदी भाषा की वैश्विकता सिध्द करना शोधकर्ता का मूल उद्देश रहा है। हिंदी भाषा वैश्विक रूप स्पष्ट करना और हिंदी भाषा को सशक्त बनाना ही शोधार्थी के अध्ययन का मुलाधार है ।

## 1.4 शोध की उपयोगिता :

21 वी सदी में वैश्विकरण के दौर में कई तरह से हिंदी का महत्त्व सामने आया है। विदेशी कंपनियाँ तथा बहुउद्देशिय कंपनियाँ हिंदी तथा भारतीय भाषा के जानकारों को अधिकारी तथा अन्य महत्त्वपूर्ण जगहों पर नियुक्त करने में रूचि ले रहें है। क्योंकि वे जानते है कि, भारत में अपना अस्तित्व बनाए रखना है और वैश्विक अधिपत्य पाना है तो हिंदी भाषा ही महत्त्वपूर्ण कड़ी साबीत होगी। हिंदी भाषा को वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करने के इस तरह के शोधकार्य की आवश्यकता है।

भाषा बहते नीर की तरह है, हिंदी भाषा भी अब अंतरराष्ट्रीयता की ओर चल पड़ी है। भाषा हमारे संस्कारों की अभिव्यक्ति को स्पष्ट करती है। भाषा ही देश, काल की संस्कृति की आत्मा होती है। भारत वासियों को इस बात का गर्व है कि उसके पास भाषाओं की विविधता है जैसे संस्कृत, प्राकृत, द्रविड, फारसी, हिंदी आदि। इन सभी भाषाओं को एकसुत्र में बांधकर उन्हे विकसित करने का दायित्व राष्ट्रभाषा हिंदी निभा रही है। भारतीय भाषाओं में सर्वोपरि स्थान रखनेवाली हिंदी भाषा ने आज

विश्व में अपने जड़े जमाई है। आज हिंदी भाषा वैश्विक स्तर पर सभी दृष्टियों से विकसित होती हुई नजर आ रही है। दिन-प्रतिदिन साहित्य निर्मिती, शब्द संपदा, तकनिकी, या बोलचाल हो हिंदी भाषा विश्वपटल पर एक नयी छाप छोड़ रही है। हिंदी भाषा के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार में हिंदी भाषा के जानकार, अनेक प्रवासी भारतीय और विदेशी विव्दान इनका योगदान रहा है।

आज विश्व के सभी महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन का मौलिक कार्य हो रहा है। इसे साथ ही नेपाल, मॉरिशस, फीजी, गयाना, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, साऊथ अफ्रीका, हॉलेण्ड, ग्रेट ब्रिटन, अमेरिका आदि अनेक देशों में भारतवंशी और अप्रवासी भारतीयों का बड़ा समाज मौजुद है जो उत्सवों-त्यौहारों, रोजमर्रा की जिन्दगी में अनेक अवसरों पर हिंदी और आंशिक रूप से अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग करते है। इसकारण भी हिंदी भाषा ने विश्व में व्यापक रूप प्रदान किया है।

भारत की महान हिंदी साहित्यिक परंपरा की पहचान विश्व में होने के लिए अमीर खुसरो, जायसी, तुलसी, सूर, कबीर, मीराँबाई, रसखान, प्रेमचंद, प्रसाद, निराला आदि जैसे महान रचनाकारों का योगदान रहा है उनका भी अध्ययन हिंदी की वैश्विकता के संदर्भ में करना आवश्यक है। भारती की आत्मा की पहचान भारतीय भाषाओं और विशेषतः हिंदी में लिखे गए साहित्य से ही विश्व में हो सकती है। हिंदी भाषा की वैश्विकता संबंधी गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने कहा था - " एक दिन हिंदी एशिया ही नहीं, विश्व की पंचायत में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। संसार की कोई भी भाषा मनुष्य जाति को उतना ऊँचा उठाने, मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाने तथा संसार को सभ्य बनाने में उतनी सफल नहीं हुई जितनी आगे चलकर हिन्दी होगी।" हिंदी भाषा की वैश्विकता ने गणेश शंकर विद्यार्थी के कथन के अनुसार विश्व में अपना जड़े फैलाएँ है। इस कारण भी हिंदी भाषा की वैश्विकता के प्रति मेरा भी आकर्षण रहा है और जनसंचार माध्यमों ने भी विश्वस्तर पर हिंदी को लेकर जाने में मौलिक सहयोग दिया है।

## 1.5 शोध प्रबंध अध्यायों का विभाजन :

**" हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों का योगदान (विशेष संदर्भ २००० से २०१५ तक)"** इस विषय पर अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैंने छः अध्यायों में विभाजित किया है -

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम अध्याय | - | हिंदी भाषा का उद्‌भव एवं विकास |
| व्दितीय अध्याय | - | वैश्विकरण का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं वैश्विकरण की प्रक्रिया |
| तृतीय अध्याय | - | जनसंचार माध्यम : अर्थ, स्वरूप, परिभाषा तथा विकास |
| चतुर्थ अध्याय | - | हिंदी भाषा का वैश्विक रूप |
| पंचम अध्याय | - | हिंदी भाषा की वैश्विकता एवं जनसंचार माध्यम |
| षष्टम अध्याय | - | हिंदी विज्ञापन का इतिहास;भाषिक वैश्विकरण में विज्ञापनों की भूमिका |
| सप्तम अध्याय | - | उपसंहार : निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ |

इसप्रकार उपरोक्त अध्यायों व्दारा शोधनिर्देक के मार्गदर्शन में **"हिंदी भाषा की वैश्विकता में जनसंचार माध्यमों का योगदान (विशेष संदर्भ २००० से २०१५ तक)"** इस विषय पर संशोधन कार्य होगा।

**प्रथम अध्याय :** प्रथम अध्याय में हिंदी भाषा का उद्‌भव एवं विकास पर विस्तारित रूप से अध्ययन किया जाएगा। प्रथम अध्याय के शीर्षक के अंतर्गत

1.1 हिंदी भाषा का उद्‌भव

1.2 व्युत्पत्ति, परिभाषा और स्वरूप

1.3 हिंदी भाषा का विकास

आदिकाल, भक्तिकाल, (मुगल कालखंड), रीतिकाल (मूगल तथा अंग्रेजी शासनकाल, आधुनिक काल, स्वतंत्रता अंदोलन की भाषा, स्वातंत्र्योत्तर कालखंड, राजभाषा, संपर्क भाषा, संपर्कभाषा, (पत्रकारिता की भाषा के रूप में संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधान)

1.4 हिंदी का प्रयोजनमूलक रूप - सरकारी कार्यालय, पत्रचार

1.5 हिंदी भाषा और देवनागरि लिपि का विकास

1.6 उपसंहार

आदि उप शीर्षक पर  विस्तारित रूप से अध्ययन शोधछात्र व्दारा होगा।

**व्दितीय अध्याय :** व्दितीय अध्याय में वैश्विकरण का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं वैश्विकरण की प्रक्रिया पर विस्तारित रूप से अध्ययन होगा। व्दितीय अध्याय के शीर्षक के अंतर्गत

2.1 वैश्विकरण का अर्थ

2.2 वैश्विकरण का स्वरूप  एवं परिभाषा

2.2.1 उदारिकरण

2.2.2 नीजिकरण

2.2.3 वैश्विकरण

2.3 वैश्विकरण की प्रक्रिया

2.3.1 वैश्विकरण : वाणिज्य

2.3.2 वैश्विकरण : विज्ञान एवं तकनिकि

2.3.3 वैश्विकरण : कला

2.3.4 वैश्विकरण : कृषि

2.3.5 वैश्विकरण : समाज

2.3.6 वैश्विकरण : साहित्य

2.3.7 वैश्विकरण : परिवार

2.3.8 वैश्विकरण : भाषा

2.4 उपसंहार

**तृतीय अध्याय :** तृतीय अध्याय में जनसंचार माध्यम : अर्थ, स्वरूप, परिभाषा तथा विकास पर विस्तारित रूप से अध्ययन किया जाएगा। तृतीय अध्याय कें शीर्षक के अंतर्गत

3.1 जनसंचार माध्यम अर्थ एवं परिभाषा

3.2 जनसंचार माध्यम का स्वरूप

3.3 जनसंचार माध्यम के प्रकार

- परंपरागत जनसंचार माध्यम
- आधुनिक जनसंचार माध्यम

3.4 जनसंचार माध्यम का विकास

3.5 जनसंचार माध्यम का वर्तमान रूप

3.6 जनसंचार माध्यमों का हिंदी भाषा वैश्विकरण में योगदान

3.5 उपसंहार

आदि उप शीर्षक पर विस्तारित रूप से अध्ययन शोधछात्र व्दारा होगा।

**चतुर्थ अध्याय :** चतुर्थ अध्याय में हिंदी भाषा का वैश्विक रूप पर विस्तारित रूप से अध्ययन किया जाएगा। चतुर्थ अध्याय के शीर्षक के अंतर्गत

4.1 विश्व भाषा के रूप में हिंदी का रूप

4.2 शिक्षा क्षेत्र में हिंदी का वैश्विक रूप

4.3 अंतरजाल (इंटरनेट) पर प्रयुक्त वैश्विक रूप

4.4 वैश्विक धरातल पर हिंदी सिनेमा

4.5 उपसंहार

**पंचम अध्याय :** पंचम अध्याय में हिंदी भाषा की वैश्विकता एवं जनसंचार माध्यम पर विस्तारित रूप से अध्ययन किया जाएगा। पंचम अध्याय के शीर्षक के अंतर्गत

**5.1 हिंदी भाषा और मुद्रित जनसंचार माध्यम**

5.1.1 दैनिक समाचार पत्र

5.1.2 सामाप्ताहिक समाचार पत्र

5.1.3 पाक्षिक

5.1.4 साप्ताहिक पत्रिकाएँ

5.1.5 मासिक पत्रिकाएँ

5.1.6 व्दैमासिक पत्रिकाएँ

4.1.6 त्रैमासिक पत्रिकाएँ

निष्कर्ष

**5.2 दूरदर्शन, आकाशवाणी , अंतरजाल (इंटरनेट), भ्रमणध्वनि(मोबाईल) और हिंदी**

5.2.1 दूरदर्शन और हिंदी

5.2.1.1 प्रस्तावना

5.2.1.2 शिक्षा के चैनल

5.2.1.3 खेल प्रसारण चैनल

5.2.1.4 समाचार चैनल

5.2.1.5 मनोरंजन के विभिन्न चैनल

5.2.1.6 फिल्म संबंधी चैनल

5.2.1.7 आध्यात्मिक कार्यक्रम

5.2.1.8 हिंदी भाषा की वैश्विकता में दूरदर्शन का महत्त्व

5.2.2 आकाशवाणी और हिंदी भाषा

5.2.2.1 हिंदी मे प्रसारित आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रम

5.2.2.2 वैश्विक स्तर पर कार्यक्रमों की लोकप्रियता

5.2.2.3 हिंदी के शैक्षिक कार्यक्रम

5.2.2.4 हिंदी मनोरंजन कार्यक्रम

5.2.2.5 किसानों संबंधी कार्यक्रम

5.2.2.6 खेल संबंधी कार्यक्रम

5.2.2.7 विभिन्न रेडीओ स्टेशन

5.2.2.8 हिंदी की वैश्विकता में आकाशवाणी का योगदान

5.2.2.9 निष्कर्ष

5.2.3 अंतरजाल (इंटरनेट) और हिंदी भाषा

5.2.3.1 हिंदी का वैश्विक रूप एवं इंटरनेट

5.2.3.2 हिंदी वेबसाईट

5.2.3.3 हिंदी ब्लॉग

5.2.3.4 सूचना एवं जनसंचार माध्यम

5.2.3.5 निष्कर्ष

5.2.4 भ्रमणध्वनि (मोबाईल) और हिंदी भाषा

5.2.4.1 मोबाईल और हिंदी भाषा संबंध

5.2.4.2 वैश्विक स्तर पर मोबाईल में हिंदी भाषा की सुविधा

5.2.4.3 हिंदी भाषा विकास में मोबाईल का योगदान

5.2.4.4 निष्कर्ष

4.5 उपसंहार

**षष्टम अध्याय :** षष्टम अध्याय में हिंदी विज्ञापन : जनसंचार माध्यम इस अध्याय पर विस्तारित रूप से अध्ययन किया जाएगा। षष्टम अध्याय के शीर्षक के अंतर्गत

**6.1 हिंदी विज्ञापन : जनसंचार माध्यम**

6.1.1 हिंदी विज्ञापन स्वरूप एवं परिभाषा

6.1.2 हिंदी विज्ञापन का इतिहास

6.1.3 हिंदी विज्ञापन की बहुआयामी भूमिका

6.1.4 हिंदी भाषिय विज्ञापन और वैश्विक व्यवसाय

6.1.5 हिंदी की वैश्विकता एवं विज्ञापन

6.1.6 निष्कर्ष

**सप्तम अध्याय :** सप्तम अध्याय में उपसंहार, निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ इस अध्याय में विस्तारित रूप से अध्ययन कर समुचे अध्यायों पर निष्कर्ष निकाले जाएगें।

**7.1 उपसंहार**

# संदर्भ ग्रंथ सूची

१. वैश्विकता के संदर्भ में हिंदी - शैलेजा पाटील

२. इक्कीसवीं सदी में हिन्दी साहित्य स्थिति एवं संभावनाएँ - रंजना चावड़ा, विजय शिंदे, सुलक्षणा घुमरे

३. जनसंचार एवं पत्रकारिता - प्रो. रमेश जैन

४. प्रयोजन मूलक हिन्दी - डॉ. दक्षा निमावत

५. संचार माध्यम तकनीकी और लेखन - डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ

६. हिंदी साहित्य बाजार से बाजारवाद तक - डॉ. भगवान गव्हाडे

७. हिंदी विज्ञापन : परख और पहचान

८. हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषारूप - डॉ. माधव सोनटक्के

९. हिंदी भाषा और उसके विविध रूप - डॉ. हिरालाल शर्मा

१०. आधुनिक विज्ञापन - डॉ पतंजली

११. प्रयोजनमूलक हिंदी तथा भाषा कम्प्युटिंग- डॉ. जमादार ए.एच., प्रा. जॉन अहमद के.जे.

12. दैनिक भास्कर समाचार पत्र

13. लोकमत समाचार समाचार पत्र

शोधछात्र

शोधनिर्देशक

**बालाजी गोविंदराव कारामुंगीकर**

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर